Toppersnotes
Unleash the topper in you

बेसिक कम्प्यूटर अनुदेशक

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर

भाग - 1

राजस्थान का सामान्य ज्ञान

SIERRA INNOVATIONS

COMPUTER INSTRUCTOR

राजस्थान का सामान्य ज्ञान

राजस्थान का भूगोल

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	राजस्थान की उत्पत्ति, स्थिति, विस्तार एवं क्षेत्रफल	1
2.	राजस्थान का भौतिक प्रदेश एवं विभाग	8
3.	राजस्थान का अपवाह तंत्र	19
4.	राजस्थान की झीलें	27
5.	राजस्थान की जलवायु	32
6.	राजस्थान में मृदा संसाधन	39
7.	राजस्थान में वन–संसाधन एवं वनस्पति	44
8.	राजस्थान में खनिज सम्पदा	49
9.	राजस्थान में ऊर्जा स्त्रोत	58
10.	राजस्थान में पशुधन	67
11.	राजस्थान में कृषि एवं सिंचाई परियोजनाएँ	71
12.	राजस्थान की जनसंख्या	80
13.	राजस्थान में वन्यजीव एवं इनका संरक्षण	82
14.	राजस्थान में उद्योग	86

राजस्थान का इतिहास एवं कला संस्कृति

1. प्राचीन राजस्थान का इतिहास 90
   - परिचय
   - प्राचीन सभ्याताएँ 92
2. मध्यकाल राजस्थान का इतिहास 98
   - प्रमुख राजवंश एवं उनकी विशेषताएँ
   - राजस्थान की रियासतें और अंग्रेजों के साथ संधियाँ
3. आधुनिक राजस्थान का इतिहास 138

- 1857 की क्रांति 138
- प्रमुख किसान आन्दोलन 140
- प्रमुख जनजातिय आन्दोलन 142
- प्रमुख प्रजामण्डल आन्दोलन 143
- राजस्थान का एकीकरण 148

4. राजस्थान कला एवं संस्कृति

- राजस्थान के त्यौहार 151
- राजस्थान के लोक देवता 158
- राजस्थान की लोक देवियाँ 162
- राजस्थान के लोक सन्त एवं सम्प्रदाय 166
- राजस्थान के लोकगीत 171
- राजस्थान की लोकगायन की शैलियाँ 172
- राजस्थान के संगीत 173
- राजस्थान के लोक नृत्य 174
- राजस्थान के लोकनाट्य 178
- राजस्थान की जनजातियाँ 181
- राजस्थान की चित्रकला 184
- राजस्थान की हस्तकलाएँ 189
- राजस्थान का साहित्य एवं प्रकार 191
- राजस्थान की प्रमुख बोलियाँ 196

5. राजस्थान की स्थापत्य कला

- किले एवं स्मारक 198
- राजस्थान के जिले एवं धार्मिक स्थल 207
- राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व 210
- राजस्थान का खान–पान एवं वेश–भूषा, आभूषण 215

राजस्थान की जलवायु

भूमिका:- एक अल्पावधि में किसी विशिष्ट क्षेत्र में विभिन्न जलवायविक तत्वों (तापक्रम, वायुदाब, वायुवेग, वर्षण, आर्द्रता, की औसत वायुमंडलीय दशाओं को मौसम कहते है। इसी मौसम की दीर्घ कालावधि 30-35 वर्ष का औसत जलवायु कहलाता है ।

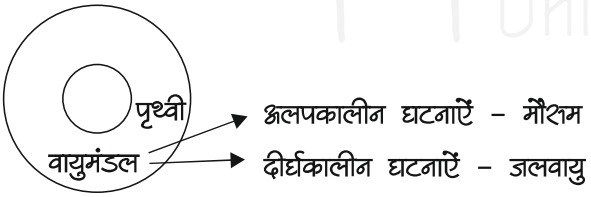

नोट :- राजस्थान की स्थिति
शीतोष्ण - 32 जिले
उष्ण - बाँसवाडा

C जलवायु वर्गीकरण	
सामान्य वर्गीकरण	व्यक्तिगत वर्गीकरण
जलवायु के प्रकार - 5 आधार - वर्षा	1. कोपेन आधार - वनस्पति, वर्षा, तापमान
	2. ट्रिवार्था - वर्षा
	3. थार्नथ्वेट - तापमान, वाष्पीकरण की मात्रा, वर्षा

(i) सामान्य वर्गीकरण

राजस्थान की जलवायु को सामान्य आधार पर पाँच भागो में बाँटा जाता है जिसका आधार वर्षा को माना जाता है ।

जलवायु	वर्षा	भौतिक प्रदेश
शुष्क कटिबन्ध जलवायु	0-20CM	पश्चिमी मरूस्थल
अर्द्धशुष्क कटिबन्ध जलवायु	20-40CM	पश्चिमी मरूस्थल
उपआर्द्र कटिबन्ध जलवाय	40-60CM	अरावली
आर्द्र कटिबन्ध जलवायु	60-80CM	पूर्वी मैदान
अतिआर्द्र कटिबन्ध जलवायु	80-120CM	हाडौती

(ii) व्यक्तिगत वर्गीकरण

1. कोपेन का जलवायु वर्गीकरण

- वर्षा व तापमान को माना गया है ।

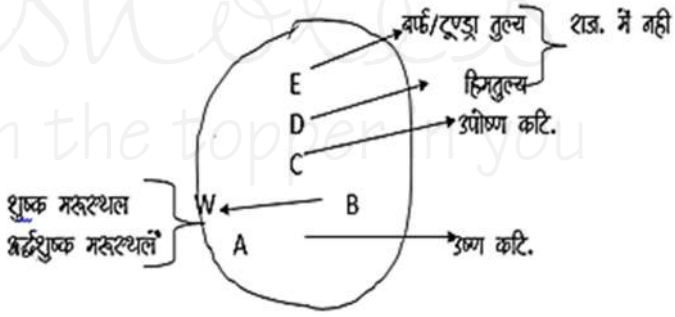

B { W- शुष्क मरूस्थल जलवायु =BWhw
S- अर्द्धशुष्क/स्टेपी जलवायु =BShw
=Aw
=Cwg

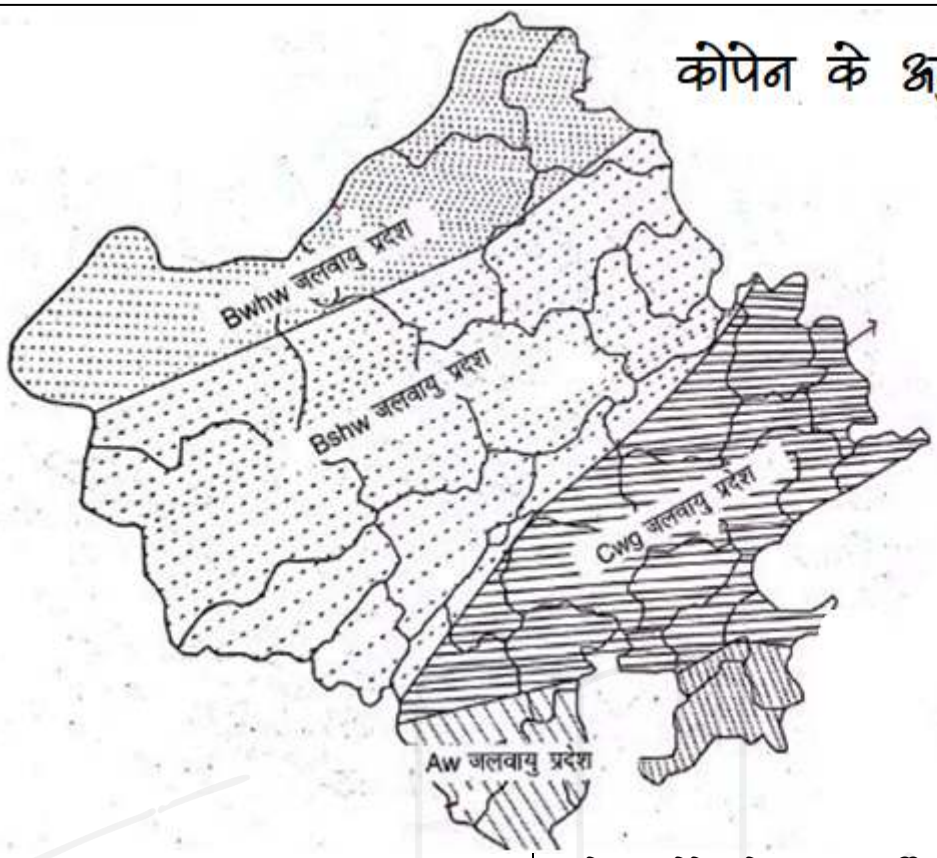

(1) Aw

जलवायु – उष्णकटिबन्धीय आर्द्र/अति आर्द्र जलवायु
वनस्पति – सवाना (ऊँची व सघन घास)
विस्तार – कोटा, बांरा, झालावाड, डूँगरपुर, बाँसवाडा, प्रतापगढ माउण्ट आबू
यहां पर मानसूनी पतझड वन पाये जाते है ।

नोटः– इस जलवायु प्रदेश में ''सघन वनस्पति'' पाई जाती है ।

(2) BWhw:-

जलवायु – शुष्क मरूस्थलीय जलवायु
वनस्पति – मरूद्भिद वनस्पति/जीरोफाईट्स
विस्तार – जैसलमेर, बीकानेर
आंशिक भाग–श्रीगंगानगर, हनुमानगढ, चूरू
नोटः– न्यूनतम वर्षा वाला जलवायु प्रदेश जहॉ कंटीली वनस्पति पाई जाती है।

(3) BShw:-

जलवायु – अर्द्धशुष्क मरूस्थलीय/स्टेपी जलवायु
वनस्पति – स्टेपी
विस्तार – लूनी बेसिन, घग्घर बेसिन, नागौर, शेखावाटी

नोटः– कोपेन के जलवायु वर्गीकरण में यह सबसे बडा जलवायु प्रदेश है ।

(4) Cwg:-

जलवायु – उप–आर्द्र जलवायु
वनस्पति – मानसूनी वनस्पति
विस्तार – अलवर, भरतपुर, करौली, धौलपुर (ABCD)
राजसमन्द, सिरोही, अ.मा., टोक, उदयपुर(RSTU)

नोटः– सर्वाधिक उपजाऊ भौतिक प्रदेश जहॉ जनसंख्या घनत्व सर्वाधिक है ।

ट्रिवार्था जलवायु वर्गीकरण

ट्रिवार्था के अनुसार राजस्थान की जलवायु को 4 भागों में बाँटा जाता है जिसका आधार वर्षा को माना जाता है ।

कोपेन	ट्रिवार्था	वर्षा
Aw	Aw	100cm
BWhw	BWh	10cm
BShw	BSh	30cm
Cwg	Caw	70cm

3. थॉर्नथ्वेट जलवायु वर्गीकरण

राजस्थान की जलवायु को थॉर्नथ्वेट के द्वारा तापमान, वाष्पीकरण और वर्षा के आधार पर 4 भागों में बाँटा गया है ।

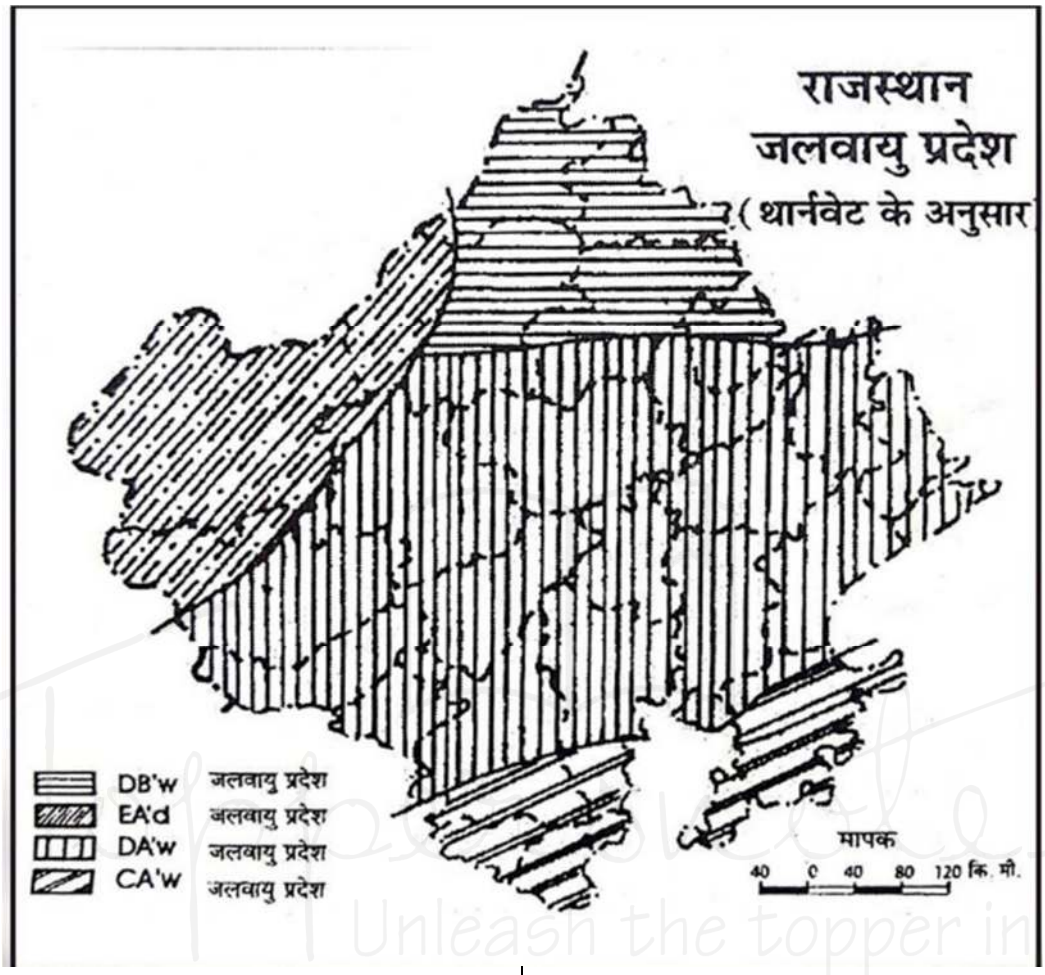

नोट :-
थॉर्नथ्वेट का सबसे बडा जलवायु प्रदेश=DA'w
व्यक्तिगत जलवायु वर्गीकरण में सर्वाधिक मान्यता प्राप्त थॉर्नथ्वेट का जलवायु वर्गीकरण है ।

जलवायु ऋतु वर्गीकरण

1. ग्रीष्म ऋतु (मार्च - जून)
2. वर्षा ऋतु (जून - सितम्बर)
3. शरद ऋतु (अक्टूबर - नवम्बर)
4. शीत ऋतु (दिसम्बर - फरवरी)

1. ग्रीष्म ऋतु

लू	आँधी	भभूल्या
गर्म व शुष्क हवाएं TP↓ AP↑	धूल भरी नमी आर्द्रतायुक्त हवाएं (27 दिन)	धूल भरी + चक्रवाती हवाएं

नोट :-

- ग्रीष्म ऋतु की वह घटना जो तापमान को बढाती है:- लू
- ग्रीष्म ऋतु की वह घटना जो तापमान को कम करती है - आंधी
- ग्रीष्म ऋतु में सर्वाधिक गर्म माह:- जून
- 21 जून को जब सूर्य की किरणें कर्क रेखा पर खींची पडती है । तो राज्य में भंयकर गर्मी पडती है ।
- सर्वाधिक आंधियां श्रीगंगानगर 27 दिन व न्यूनतम आंधियां झालावाड 3 दिन आती है ।
- ग्रीष्म ऋतु में सर्वाधिक गर्म जिला - चूरू
- ग्रीष्म ऋतु में सर्वाधिक गर्म स्थान - फलौदी (जोधपुर) बोरियावाली (बीकानेर)
- राजस्थान में दैनिक तापान्तर सर्वाधिक- जैसलमेर (45-25=20°c)
- राजस्थान में वार्षिक तापान्तर सर्वाधिक- चुरू (50-10=40°c)

2. वर्षा ऋतु

मानसून

- शब्द की उत्पत्ति – "मौसिम"
- भाषा – अरबी
- जनक – अल मसूद्दी
- अर्थ – मौसमी हवाओं की दिशा में परिवर्तन जो जल से स्थल की ओर होता है ।
  या
  "ऋतु में परिवर्तन"
- मानसून का नाम – दक्षिणी–पश्चिमी मानसून(हिन्द महासागर से उत्पति)

मानसून की तिथियाँ			
आगमन तिथि		निवर्तन तिथि	
देश	राजस्थान	देश	राजस्थान
1 जून मुख्य भूमि केरल	15 जून बांसवाडा व डूंगरपुर	31 अक्टूबर	27–30 सितम्बर

नोट:–

1. देश में मानसून सबसे पहले अंडमान–निकोबार(25 मई) को पहुँचता है।
2. देश में मानसून सबसे अन्त में जैसलमेर पहुँचता है (15 जुलाई)

मानसून की प्रकृति

मानसून का देरी से आना और समय से पहले लौट जाना मानसून की शाखाएँ:–

दक्षिण पश्चिमी मानसून	
अरब सागरीय शाखा	बंगाल की खाडी की शाखा
1. पश्चिमी घाट 2. छोटा नागपुर 3. हिमाचल शाखा (राजस्थान सम्बन्धित मानसूनी शाखा)	1. पूर्वी हिमालय 2. उत्तर विशाल मैदान की शाखा

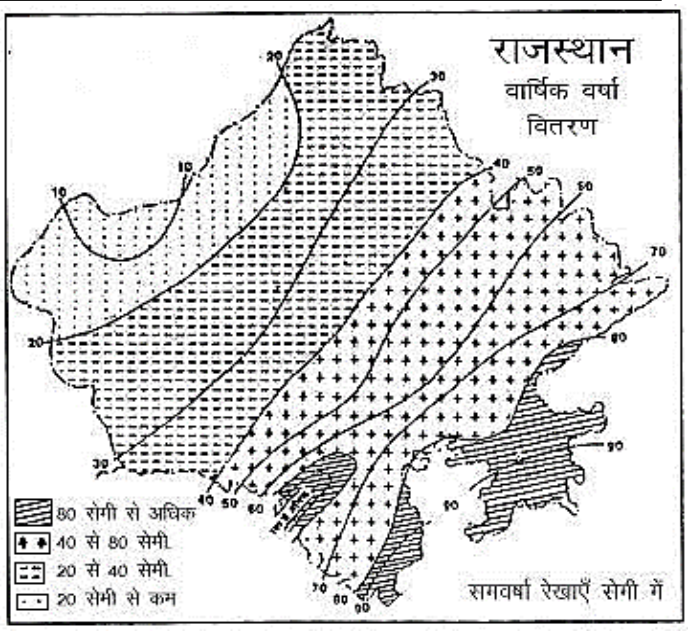

नोट

1. राजस्थान में मानसून सबसे पहले अरब सागरीय शाखा(हिमालय शाखा) से आता है ।
   'अरब सागरीय शाखा से राज. में अधिक वर्षा नहीं होती क्योंकि अरावली इसके समानान्तर है ।
2. राजस्थान में सर्वाधिक वर्षा बंगाल की खाडी की शाखा(उत्तर विशाल मैदान) से होता है ।
   'पूरवाई:–राजस्थान में बंगाल की खाडी की ओर से आने वाली पूर्वी मानसूनी पवनों को "पूरवाई" कहा जाता है । जिनके द्वारा वर्षा मुख्यतः अरावली के पूर्वी भाग में होता है ।

मानसून प्रभाव

- राज्य में झालावाड में सर्वाधिक 100 सेमी वर्षा होती है ।
- माउण्ट आबू एक मात्र स्थान है, जहां वर्षा सर्वाधिक 150 सेमी होती है ।
- जैसलमेर में सर्वाधिक कम 15 सेमी वर्षा होती है ।
- राज्य का वार्षिक वर्षा का औसत 57.51 है ।

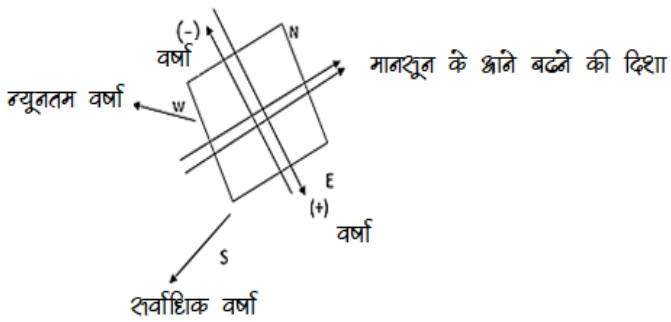

मानसून के दौरान की घटनाएँ

(i) मानसून प्रस्फोट – जुलाई
(ii) मानसून प्रतिच्छेदन – अगस्त/सितम्बर
(iii) मानसून निवर्तन – अक्टूबर
(iv) कार्तिक हीट

(i) मानसून प्रस्फोट
मानसून के शुरू में होने वाली तेज वर्षा को मानसून प्रस्फोट कहा जाता है ।

(ii) मानसून प्रतिच्छेदन
मानसून प्रस्फोट के बाद 2-3 सप्ताह तक वर्षा का ना होना । इसका समय मुख्यतः अगस्त या सितम्बर होता है

(iii) मानसून निवर्तन
मानसून के लौटने की घटना को कहा जाता है जिसका राजस्थान में लौटने का समय अक्टूबर-नवम्बर है(जबकि भारत में नवम्बर व मध्य दिसम्बर है)

(iv) कार्तिक हीट
मानसून के निवर्तन के दौरान अचानक तापमान का बढ जाना अक्टूबर हीट या कार्तिक हीट कहा जाता है ।

मानसून को प्रभावित करने वाली वैश्विक घटनाएँ

(i) अल नीनो:-
क्या – गर्म जलधारा
स्थिति – पूर्वी प्रशान्त महासागर
समय – दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह
प्रभाव – मानसून का देरी से पहुँचना एवं कम प्रभावशाली होना।

नोट:- इस Child of Christ या ईशु का शिशु या महासागरीय बुखार कहा जाता है ।

(ii) ला नीना:-
क्या – ठण्डी जलधारा
स्थिति – पूर्वी प्रशान्त महासागर
समय – दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह
प्रभाव – मानसून का समय पर आना और अधिक प्रभावशाली होना ।

नोट:- ला नीना को अल नीनो की छोटी बहिन कहा जाता है ।

3. शरद ऋतु

1. मानसून का निवर्तन (अक्टूबर-नवम्बर)
2. कार्तिक हीट

4. शीत ऋतु

क्या:- शीतकालीन वर्षा को मावठ कहा जाता है।
कहाँ से:- भूमध्य सागर

किसके द्वारा:- पश्चिमी विक्षोभ या जेट स्ट्रीम के द्वारा
कब – दिसम्बर से मार्च
कुल वार्षिक वर्षा का 10% है ।

लाभ:- रबी फसलों का (max.गेहूँ)

प्रभाव क्षेत्र
राजस्थान का उत्तर-पश्चिमी भाग(गंगानगर, हनुमानगढ, बीकानेर, जैसलमेर)

नोट:- मावठ का लाभ सर्वाधिक गेहूँ को होने के कारण इसे Golden drops भी कहा जाता है ।

2. शीत लहर
- क्या:- शीत ऋतु में हिमालय की ओर से आने वाली ठण्डी हवाओं को शीत लहर कहा जाता है ।
- सर्वाधिक ठण्डा जिला चूरू तथा सर्वाधिक ठण्डा स्थान माउण्ट आबू है । तो सबसे ठण्डा महिना जनवरी होता है ।
- राजस्थान में सबसे ठण्डा दिन 22 दिसम्बर होता है । सर्दी में सबसे छोटा दिन व सबसे लम्बी रात 22 दिसम्बर होती है ।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

दिशा:- NE → SW

प्रभावित क्षेत्र:- चुरू (Maxi.) सीकर, बीकानेर

समयः-जनवरी

जलवायु सम्बन्धी अन्य महत्वपूर्ण बिन्दू

1. समवर्षा रेखा (**Isohyte line**)
   मानचित्र में वे काल्पनिक रेखाएँ जो एकसमान वर्षा वाले स्थानों को जोडती है।
   प्रमुख समवर्षा रेखाः-
   1. 25cm.समवर्षा रेखा जो मरूस्थल को शुष्क व अर्द्धशुष्क दो भागों में बॉटती हैं।
   2. 40 cm.समवर्षा रेखा राजस्थान को दो बराबर भागों में बॉटती है।
   3. 50 cm.समवर्षा रेखा अरावली पर स्थित हैं जो पूर्वी मैदान व प. मरूस्थल को अलग करती हैं।

2. समवायुदाब रेखा (**Isobar line**)
   मानचित्र में वे काल्पलिन रेखाएँ जो एकसमान वायुदाब वाले स्थानों को जोडती हैं।

वायुदाब रेखाएं	
जनवरी - 2	जुलाई - 4
1018 mb	997 mb
1019 mb	998 mb
	999 mb
	1000 mb

Toppersnotes
Unleash the topper in you

राजस्थान में मृदा संसाधन

राजस्थान सरकार के कृषि विभाग ने मृदाओं उर्वरता के आधार पर 14 भागों में विभक्त किया है किन्तु राजस्थान में मृदा का वर्गीकरण दो तरह से किया जाता है ।

सामान्य वर्गीकरण	वैज्ञानिक वर्गीकरण
मृदा के गठन, रंग इत्यादि के आधार पर 10 प्रकार की मृदाएं मिलती है ।	यह अमेरिका के वृहद् मृदा भौगोलिक तंत्र द्वारा किया गया है जिसके आधार पर राजस्थान में पांच प्रकार की मृदाएं मिलती है ।

- 19 फरवरी 2015 को राजस्थान के सूरतगढ में मिट्टी की खराब होती गुणवत्ता की जांच करने हेतु व कृषि उत्पादकता को बढाने हेतु ''मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना'' की शुरूआत की गई ।
- विश्व मृदा दिवस 3 दिसम्बर को बनाया जाता है ।
- राजस्थान में वृहत रूप से अपशिष्ट एवं निर्वासित मृदा पायी जाती है। इसमें सामान्य रूप से निम्नांकित प्रकार की मृदाएँ मिलती है –

तत्व
K = पोटेशियम
N = नाइट्रोजन
P = फॉस्फोरस

क्र.स.	मृदा का नाम	जिलों का नाम	विशेषताएँ
1.	रेतीली/बलूई मृदा	जैसलमेर,जोधपुर, बाडमेर, बीकानेर, चूरू, नागौर	• मोटा कण • नमी धारण क्षमता कम • N,P,कार्बनिक तत्वों, ह्यूमस की कमी • मोटे अनाज का उत्पादन, जैसे बाजरा, मूंग, मोठ, ज्वार, ग्वार
2.	भूरी रेतीली/धूसर/ सिरोजम/स्टेपी/ पीली/भूरी मृदा ग्रेपेन्टेड	सीकर, अजमेर, पाली, जालौर	यह अर्द्ध शुष्क क्षेत्र की मृदा है। • N,P, ह्यूमस की कमी • इस मिट्टी के क्षेत्र में 90 से 150 सेमी. की गहराई पर चुने की परत मिलती है, जिसे ''हार्ड पैन'' कहते है ।
3	मध्यम काली/ कपासी मृदा	कोटा, बूँदी, बारा, झालावाड	• प्राकृतिक रूप से छ पायी जाती है तथा I भी पर्याप्त मात्राओं में मिलता है। • ह्यूमस की कमी • टिटेनीफेरस मैग्नेटाइट के कारण मृदा का रंग काला होता है ।
4	भूरी मिट्टी	अजमेर, चित्तोडगढ, टोक, सवाईमाधोपुर	• यह बनास नदी के प्रवाह क्षेत्र में पायी जाती है इसमें कार्बनिक तत्वों की कमी पायी जाती है ।
5	मिश्रित लाल मिट्टी	डूंगरपुर, बांसवाडा, उदयपुर,राजसमंद, चित्तौगढ, भीलवाडा, प्रतापगढ	• मालवा के पठार के संक्रमण क्षेत्र में पायी जाती है । लौह ऑक्साइड की प्रधानता मक्के की खेती के लिए उपयुक्त है ।

6	मिश्रित लाल–पीली मिट्टी	अजमेर, भीलवाडा, सवाई माधोपुर, करौली, टोक,	• लौह ऑक्साइड पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है । • मक्का की खेती के लिए विशेष रूप से उपयोगी ।
	(आज भील लाल–पीला हुआ तो उसे सवा किलो का टोकन दिया)		
7	जलोढ मिट्टी	अलवर, भरतपुर, करौली, धोलपुर, (ABCD)जयपुर, टोंक, दौसा, घग्घर बेसिन	• यह नवीन मृदा है तथा सभी फसलों के लिए उपयुक्त है । इसमें ह्यूमस की कमी पायी जाती है ।
8	लाल–लोमी या लाल–दोमट मिट्टी	डूंगरपुर, बांसवाडा, उदयपुर, चित्तोडगढ	• यह जलोढ मृदा और लौह ऑक्साइड युक्त लाल मृदा का मिश्रण है जो विशेष रूप से मक्का की फसल के लिए उपयुक्त है ।
9	पर्वतीय मृदा	अरावली की उपत्यका में, विशेषतः सिरोही, उदयपुर, पाली, अजमेर आदि जिलों में।	• इस मृदा की गहराई कम होती है तथा कम उपजाऊ होती है ।
10	लवणीय मृदा	श्रीगंगानगर हनुमानगढ, बाडमेर, जालौर	• कृषि के लिए अनुपयुक्त परन्तु जिप्सम एवं ढैंचे की खाद द्वारा इसे कृषि योग्य बनाया जा सकता है । • इस मिट्टी में सोडियम क्लोराइड की मात्रा सर्वाधिक होती है ।

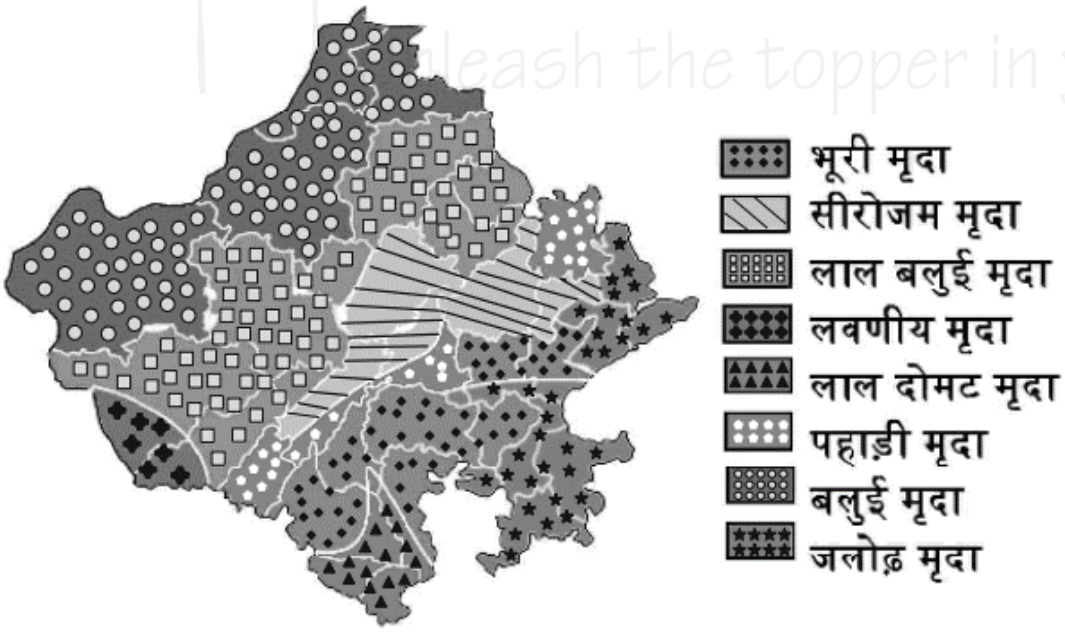

राजस्थान में मृदाओं को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से पांच प्रकारों में बांटा गया है ।

वैज्ञानिक नाम	हिंदी नाम	जिले
एरिडी सोइल्स	मरूस्थलीय मृदा	जोधपुर, बाडमेर, नागौर, बीकानेर, जैसलमेर, जालौर, सिरोही, पाली, चरू, झुंझुनू, सीकर, गंगानगर, हनुमानगढ
एल्फी सोइल्स	जलोढ मृदा	जयपुर, दौसा, अलवर, भरतपुर, सवाई माधोपुर, टोंक, भीलवाडा, चित्तौडगढ, बांसवाडा, राजसमंद, उदयपुर, डुंगरपुर, बूंदी, कोटा, बांरा झालावाड
एन्टी सोइल्स	हल्की पीली मृदा	पश्चिम राजस्थान के अन्य जिलों में
इनसेप्टी सोइल्स	पर्वतीय मृदा	सिरोही, पाली, राजसमंद, उदयपुर, भीलवाडा, चित्तौड में प्रधानता, जयपुर सवाई माधोपुर और झालावाड में भी मिलती है ।
वर्टी सोइल्स	काली मृदा	कोटा, बूंदी, बांरा, झालावाड में प्रधानता, डुंगरपुर, बांसवाडा, सवाई माधोपुर भरतपुर में भी मिलती है ।

राजस्थान कृषि विभाग ने मृदाओं का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया है

	मृदा का प्रकार	जिलें
1.	साई रोजेक्स	गंगानगर
2.	रेवेनिया	गंगानगर
3.	मरूस्थली मृदा	गंगानगर, चरू, झुंझुनू, बीकानेर, जैसलमेर, नागौर, बाडमेर, जोधपुर एवं सीकर बीकानेर
4.	जिप्सीफेरस	बीकानेर
5.	ग्रे – ब्राउन मृदा	जालौर, पाली, नागौर, अजमेर एवं सिरोही
6.	नान केल्सिल ब्राउन मृदा	जयपुर, सीकर झुंझुनू, नागौर, अजमेर एवं अलवर
7.	नवीन जलोढ मृदा	अलवर, भरतपुर, सवाई माधोपुर एवं जयपुर
8.	पीली – भूरी मृदा	जयपुर, टोंक, सवाई माधोपुर, भीलवाडा, चित्तौडगढ एवं उदयपुर
9.	नवीन भूरी मृदा	भीलवाडा एवं अजमेर
10.	पर्वतीय मृदा	उदयपुर एवं कोटा
11.	लाल – लोम	डूंगरपुर एवं बांसवाडा
12.	काली गहरी मध्यम मृदा	कोटा, बूंदी, भीलवाडा, चित्तौडगढ, भरतपुर एवं झालावाड
13.	केल्सी ब्राउन मरूस्थली मृदा	जैसलमेर एवं बीकानेर
14.	मरूस्थल एवं बालूका स्तूप	जोधपुर, बाडमेर, जैसलमेर एवं बीकानेर

राजस्थान की मृदाओं से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य

- राजस्थान में वृहद रूप से अविशिष्ट एवं निर्वासित मृदा पायी जाती है।
- काली मिट्टी से लाल मिट्टी का तथा लाल मिट्टी से पीली मिट्टी का निर्माण होता।

काली(टिटेनीफेरस मेग्नेटाइट)
↓
लाल(लौह-ऑक्साइड)
↓
पीली

- काली मिट्टी में प्राकृतिक रूप से नाइट्रोजन पाया जाता है।
- कपास का उत्पादन अधिक होने के कारण काली मिट्टी को कपासी मिट्टी भी कहा जाता है।
- रेतीली/बलुई मिट्टी का सम्पर्क जल से होने पर क्रमशः भूरी-रेतीली एवं भूरी मिट्टी का निर्माण होता है।
- बलुई मिट्टी में जमी धारण क्षमता कम होती है क्योकि कण मोटे होते है।
- वही भूरी मिट्टी में नमी धारण क्षमता सापेक्षत अधिक होती है।
- इसी तरह जलोढ मृदा के कण अत्यधिक बारीक होने के कारण इसकी नमी धारण क्षमता सर्वाधिक होती है।
  i. उदासीन मिट्टी – pH मान 7
  ii. अम्लीय मिट्टी – pH मान 7 से कम
  iii. क्षारीय मिट्टी – pH मान 7 से अधिक

नोटः-
मृदा अम्लीय होने पर उसमें रॉक फॉस्फेट (फॉस्फोराइट या केल्शियम फॉस्फेट) मिलाया जाता है तथा मृदा क्षारीय होने पर इसमें जिप्सम कैल्शियम ढेंचा सल्फेट, चूना।

Toppersnotes Unleash the topper in you

- राजस्थान में सभी मिट्टीयों में कार्बनिक तत्वों एवं ह्यूमस की कमी पायी जाती है। वहीं भारत एवं राजस्थान में लगभग सभी मृदाओं में N व P की कमी पायी जाती है ।
- पश्चिमी राजस्थान की मिट्टियों की एक विशेषता लवणता है जो कि अत्यधिक वाष्पीकरण एवं केशिका कर्षण की क्रिया के कारण होती है ।
- राजस्थान की सर्वाधिक उपजाऊ मृदा क्रमशः जलोढ एवं काली मृदा है ।
- काजरीः- काजरी का पूरा नाम central Arid zone [CAZRI] Research Institute अर्थात केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान' है। इसकी स्थापना जोधपुर में 'शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान' नाम से की गयी थी। 1959 से इसे ICAR(इंडियन काउन्सिल ऑफ एग्रीकलचर या रिसर्च या भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद) के अधीन करके इसका नाम CAZRI कर दिया गया । इसका प्रमुख कार्य शुष्क क्षेत्रों में अनुसंधान करना एवं वहाँ उत्पन्न फसलों के संबंध में अनुसंधान करना ।
- वालरा/चिमाता(झूमिंग):- अरावली पहाडी भागों के विभिन्न क्षेत्रों में आदिवासियों द्वारा वनों को काटकर या जलाकर, उनसे निर्मित उपजाऊ राख पर की जाने वाली कृषि को स्थानीय भाषा में चिमाता कहते है। भारत में इसे झूमिंग कहते है ।
- दजियाः- अरावली पर्वतमाला में पाये जाने वालें मैदानी भागों में आदिवासियों द्वारा वनों को काटकर या जलाकर उस स्थान पर की जाने वाली कृषि दजिया कहलाती है ।

मृदा अपरदन

1. अवनालिका अपरदन
2. उत्खात भूमि अपरदन
3. परतदार अपरदन
4. जलीय/चादरी अपरदन
5. धरातलीय अपरदन